आरम्भिक बाल्यावस्था के विकास पर लॉक-डाउन का प्रभाव:

समस्या एवं समाधान —

जैसा की हम जानते हैं कि वर्तमान में इस वैश्विक महामारी से बचाव हेतु हम सभी का घर में ही रहना उचित है, घर के बड़े सदस्य इस बात को भली भांति समझते है, परन्तु समस्या का सामना वहां करना पड़ रहा है जहां दो है बच्चे जिनकी उम्र 3 से 6 वर्ष है।

बालक और बन्दर समान' ये कहावत पुरानी एवं सत्य है, जैसा की इस कहावत से समझ आ रहा है कि घर में बच्चा खेलना चाहता है दौड़ना चाहता है, उछल कूद करना चाहता है - अगर बच्चों के इन सब क्रियाकलापों को रोका जाता है तो वह स्वभाविक है कि चिड़चिड़ा हो जाता है, क्योंकि यह वह अवस्था है जब बालक में सभी तरह के विकास तीव्र गति से होते हैं ऐसी अवस्था में अभिभावक का कर्तव्य है की वह समझदारी से बालक के विकास में सहयोग करें ताकि अच्छा सर्वांगीण विकास हो सके. बालक की इस अवस्था (3-6 वर्ष) में होने वाले विकास को हम संक्षिप्त में जान सकते है जैसे शारीरिक विकास - इसके अन्तर्गत शरीर का विकास जैसे (लम्बाई-चौड़ाई) हाथ पैरों का विकास जिसके लिये आवश्यक है बच्चे का खेलना कूदना, परन्तु जब बच्चा घर पर ही है तो इस तरह के क्रिया कलाप कम हो जाते है। जिसका प्रभाव बच्चे की वृद्धि पर पड़ सकता है -

सामाजिक विकास: समाज में रहते हुये बच्चा कई तरह के आचरण सीखता है. लोगों का अनुसरण कर बहुत सी बातों को सीखना. समाजीकरण होना यह तीव्र गति से होता है बच्चा इसी अवस्था में स्कूल जाना आरम्भ करता है तो स्वाभाविक है की नये लोगों के सम्पर्क में आता है और समाज में रह कर किस तरह का व्यवहार किया जाये उसे समझता है।

क्रियात्मक विकास - के द्वारा हाथों-पैरों की मांस पेशियों का विकास होता है खेल कूद दौड़ ऐसे विकास में वरदान सिद्ध होते है।

संवेगात्मक विकास :- इस अवस्था में बालक की परिस्थिति अनुसार एक ही समय में अलग-अलग संवेग रहते हैं. कभी हर्ष कभी क्रोध भय, ईर्ष्या, जिज्ञासा जो की कम समय के लिये होते है पर इसकी तीव्रता अधिक होती है

भाषा विकास : इस अवस्था में बालक पारिवारिक वातावरण से निकल बाहर की दुनियां से सामना करता है जैसे स्कूल जाना, पार्क में खेलना कूदना, नये लोगों से बातचीत करना जिससे उसकी भाषा का विकास होता है

Scanned with

वह सभी विकास सामान्यतः हर परिस्थिति में चलते रहते हैं कभी रुकते नहीं हैं, परन्तु कभी-कभी विषम परिस्थितियां इस पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है, ऐसे समय में आवश्यक है कि अभिभावक समझदारी से काम लें. बच्चों का शारीरिक, सामाजिक मानसिक एवं संवेगात्मक सन्तुलन बना रहे इसके लिये आवश्यक है कि घर के बड़े सदस्य बच्चों को अधिक से अधिक समय दें, यदि बच्चा चिढ़चिड़ा हो रहा है तो उसके साथ खेलें, अधिक से अधिक समय दें कर बच्चों को उनकी रुचि अनुसार क्रियात्मक क्रियाओं को बढ़ावा दें प्रोत्साहित करें. इस समय बच्चा स्कूल नहीं जा पा रहा है तो घर को ही कार्यशाला बना दें विभिन्न क्रियाकलापों में अभिभावक भागीदारी करें जिससे मानसिक विकास एवं बौद्धिक विकास में किसी भी तरह की रुकावट न आये, बच्चों के भाषा विकास में सुधार लाने का एक अच्छा समय है उससे अच्छे शब्दों का उपयोग करना सिखायें, अपने जीवन की अच्छी कहानियों, किस्सों को बच्चों के साथ बांटें, अच्छे अनुभव बता कर उसके मानसिक, संवेगात्मक विकास को सही दिशा प्रदान करें, घर पर ही शारीरिक काम जैसे योग, वार्जिश एवं थोड़े बहुत भागदौड़ वाले क्रिया-कलापों में बच्चों का सहयोग कर उनके अच्छे विकास में सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

यही अच्छा समय है कि- बच्चों को मशीनी जिन्दगी से इन्सानी जिन्दगी से परिचय कराने का, इस का सदुपयोग कर घर में बालकों को हमारी भारतीय परंपरायें तथा संस्कृति से परिचय करा कर उसका महत्व समझायें जिससे आगे आने वाले समय में स्वस्थ शरीर के साथ स्वस्थ समाज के निर्माण हो तथा भविष्य उज्जवल बनाये रखने में सहयोग करें।

डॉ० (मनीषा राव)
विभागाध्यक्षा गृह-विज्ञान विभाग
राजकीय महिला महाविद्यालय
बदायूँ।

Scanned with